

## मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों की मनःस्थिति का अध्ययन

डॉ. अरुण कुमार मिश्र\*

\*असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, के. डी. एस. महाविद्यालय, पाली, जौनपुर

Email: [arunkumarmishra145@gmail.com](mailto:arunkumarmishra145@gmail.com)

DOI: [doi.org/10.5281/zenodo.18206759](https://doi.org/10.5281/zenodo.18206759)

Accepted on: 30/12/2025

Published on: 10/01/2026

### सारांश:

मनःस्थिति मानव मन की एक दशा होती है जो समय, स्थान व परिस्थिति के सापेक्ष होती है न तो यह स्थिर होती है न कभी भी भावविहीन। एक ही घटना या स्थिति अलग-अलग व्यक्तियों पर एक समान प्रभाव भी डाल सकती है और अलग-अलग प्रभाव भी डाल सकती है। यदि कोई व्यक्ति अपने आपको किसी वस्तु, घटना या परिस्थिति से जोड़कर चलता है तो वह प्रभावित अवश्य होता है चाहे वह घटना या परिस्थिति अंतरराष्ट्रीय स्तर की हो या स्थानीय स्तर की व्यक्ति पर प्रभाव अवश्य डालती है। उदाहरण के लिए भारतीय शिक्षा एवं सेवाओं में लागू आरक्षण व्यवस्था को ही ले लिया जाए तो यह विभिन्न शिक्षा एवं सेवाओं में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे विभिन्न वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों को प्रभावित अवश्य करती है चाहे वे विद्यार्थी आरक्षित श्रेणी से हो या अनारक्षित श्रेणी से। इसका प्रभाव मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित श्रेणी के प्रतियोगी विद्यार्थियों की मनःस्थिति पर किस प्रकार पड़ता है? इसे ही जानने हेतु प्रस्तुत शोध किया गया है। इस शोध हेतु शोध परिकल्पना इस प्रकार है कि मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों की मनःस्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस शोध का परिसीमांकन वाराणसी व प्रयागराज मंडल के मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे 300 प्रतियोगी विद्यार्थियों तक ही सीमित है। प्रस्तुत शोध हेतु उपकरण के रूप में डॉ. एन.के. चट्टा व सुनीता चंदना द्वारा निर्मित डाइमेंशंस ऑफ़ टेंपरामेंट स्केल का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु सी.आर. (C.R.) मूल्य परीक्षण का उपयोग किया गया। विश्लेषण से पता चला कि आरक्षित श्रेणी के विद्यार्थियों की मनःस्थिति अनारक्षित श्रेणी के विद्यार्थियों की अपेक्षा सकारात्मक है।

**तकनीकी पद-** मेडिकल शिक्षा, आरक्षण, प्रतियोगी छात्र।

### प्रस्तावना:

किसी समय विशेष मनुष्य के मन की स्थिति अथवा दशा को मनःस्थिति कहा जाता है यद्यपि मनःस्थिति मनुष्य के समय, स्थान, व्यक्ति, परिस्थिति आदि से संबंधित है किंतु अलग-अलग समय पर अलग-अलग मनःस्थिति का होना स्वाभाविक है। मनुष्य का मन तो चंचल होता है और कहीं भी और कभी भी स्थिर नहीं होता वह तो सदैव चलायमान होता है तथा मानव मन कभी भी भावविहीन नहीं होता क्योंकि मन में सदैव कोई न कोई भाव उत्पन्न होता रहता है एवं भाव भी परिस्थिति पर निर्भर करते हैं जैसी परिस्थिति होती है प्रायः वैसे ही भाव उत्पन्न होते हैं। भारतीय दर्शन में मन की चर्चा तो सर्वत्र है किंतु मनोविज्ञान में मन क्या है इस पर विचारकों में मतभेद है। जहां भारतीय दर्शन मन को एक तत्व के रूप में स्वीकार करता है जैसा कि सांख्य दर्शन में वर्णित है किंतु भारतीय दर्शन का मन संबंधी विचार पाश्चात्य दार्शनिकों से पूर्णतया भिन्न है। जहां पाश्चात्य दार्शनिक मन को अभौतिक व अतिभौतिक तत्व स्वीकार कर पूढ़ल से पूर्णतः अलग मानते हैं वहीं भारतीय दर्शन मन को एक भौतिक पदार्थ मानता है इसे शरीर की भाँति भौतिक तत्व स्वीकार करता है। जहाँ पाश्चात्य दार्शनिकों ने मन को आत्मा के अर्थ में प्रयोग किया है वहीं भारतीय दर्शन मन व आत्मा को अलग-अलग तत्व माना गया है। मन की कुछ वृत्तियाँ होती हैं। जैसे- संशय, निश्चय, गर्व, स्मरण इन वृत्तियों के अनुसार अंतःकरण के विभिन्न नाम कर दिए गए हैं। जैसे- संशयात्मक, वृत्तियुक्त अन्तःकरण मन कहलाता है। निश्चय वृत्तियुक्त अन्तःकरण बुद्धि कहलाता है। गर्वयुक्त अंतःकरण के स्वरूप को चित्त कहा गया है। इस प्रकार संशय करना मन का धर्म बतलाया गया है इसके अलावा काम, संकल्प, श्रद्धा, अश्रद्धा, धैर्य, अधैर्य, लज्जा, भय आदि भी मन का स्वरूप निर्मित करते हैं।

मन की तीन अवस्थाएं होती हैं जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति ये यह अवस्थाएं ही कहीं आत्मा व कहीं चित्त की अवस्थाएं मानी गई हैं। मानव जीवन का संबंध दो पक्षों से होता है पहले हृदय या मन दूसरा बुद्धि या तर्क। जिसे हम भावना भी कह सकते हैं। मानव मन कभी भी भावविहीन नहीं होता है उसकी मन की भावनाएं समय, परिस्थिति, स्थान के अनुसार बदलती रहती हैं। मन की स्थिति जिसे हम मानसिक स्थिति या मनोदशा, मूड आदि के रूप में भी व्यक्त किया जाता है। मन की स्थिति सदैव परिवर्तित होती रहती है और कोई एक ही विषय विभिन्न व्यक्तियों पर एक सा प्रभाव भी डाल सकती है और अलग-अलग व्यक्तियों पर अलग-अलग प्रभाव भी डाल सकती है, इसका कारण यह है कि हर व्यक्ति की इच्छाएं, आकांक्षाएं, रुचि, क्षमता आदि अलग-अलग होती है। कभी-कभी व्यक्ति की

मनःस्थिति दूसरे के अनुसार भी बदल जाती है और कभी-कभी ऐसा भी होता है कि व्यक्ति की मनःस्थिति उस व्यक्ति वस्तु या घटना को सुनने या देखने से बदल जाता है जिससे उसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कोई संबंध नहीं होता है। व्यक्ति की मनःस्थिति सापेक्ष होती है कभी-कभी दूसरों के लाभ हानि या सुख-दुःख से वह सुखी या दुःखी हो जाता है। इसका कारण व्यक्ति का उस व्यक्ति की परिस्थिति या घटना से प्रेम या ईर्ष्या वस प्रभावित होना होता है। व्यक्ति की मनःस्थिति हमेशा के लिए सर्वत्र सभी व्यक्तियों के साथ सभी घटनाओं के साथ समान नहीं होती है यदि व्यक्ति जिस वस्तु या घटना या परिस्थिति से अपने को जोड़कर चलता है तो वह घटना चाहे वह अंतरराष्ट्रीय स्तर की हो या राष्ट्रीय स्तर की हो या राज्य स्तर की हो या स्थानीय स्तर की व्यक्ति पर प्रभाव डालती है एक ही घटना किसी व्यक्ति या समुदाय के लिए प्रसन्नता का कारण हो सकता है वहीं घटना दूसरे व्यक्ति या समुदाय के लिए दुःख का कारण भी हो सकता है कोई हर्षित होता है तो कोई चिंतित होता है और यह चिंता, निराशा, अवसाद, व्यक्ति की मनःस्थिति या मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने लगते हैं। **उदाहरण के लिए** भारतीय शिक्षा एवं सेवाओं में लागू आरक्षण व्यवस्था को ही ले लिया जाए तो यह विभिन्न वर्ग के प्रतियोगियों की मनःस्थिति को प्रभावित करता है किंतु इसका विभिन्न वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों की मनोस्थिति पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है इसे जानना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

---

#### **संबंधित साहित्य का अध्ययन:**

(1). बिन, एन.एन. और नागपाल आर., एन. (1970) ने अपने शोध अध्ययन “विश्वविद्यालयों में असफल रहने वाले चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान स्नातकोत्तर संस्थान के छात्रों में मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन” में पाया कि- 1. पेशेवर व्यवसायी के बच्चों में उच्च उपलब्धि प्राप्त करना जैसी कोई उच्च घटना देखने को नहीं मिली। 2. कृषि से जुड़े अभिभावकों के बच्चों में अधिकतर उपलब्धि स्तर कम पाया गया। 3. सामाजिक संबंधों में विफल छात्रों का सामाजिक क्रियाओं में अकेले रहना पाया गया।

(2). भट्टाचार्य, एम. (1988) ने अपने शोध अध्ययन “पश्चिम बंगाल के शहरी माध्यमिक स्कूलों में पढ़ने वाली किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य, हताशा व असहिष्णुता के बारे में अध्ययन” किया और अपने शोध अध्ययन में पाया कि- 1. मानसिक हताशा व असहिष्णुता के बीच उच्च सकारात्मक संबंध पाया गया। 2. मानसिक अस्वस्थता

आदर्शवादिता परोपकार की जरूरत के बीच नकारात्मक संबंध पाया गया। 3. भौतिकवादी यौन संबंध स्वतंत्रता व सुरक्षा की जरूरत को उच्च स्तर पर पाया गया।

(3). कश्यप, वी. (1989) ने “किशोरी की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक निर्धारकों पर अध्ययन” में पाया कि 1. किशोरों की समस्याएं अत्यधिक सकारात्मक चिंता, हताशा और भावनात्मक अपरिपक्वता से संबंधित थी। 2. ग्रामीण लड़के व लड़कियां भावनात्मक रूप से शहरी लड़के व लड़कियों की तुलना में काफी सुरक्षित पाई गई।

(4). श्रीवास्तव, एस.के. व प्रसाद, डी. सी. और कुमार, वि. (1999) ने अपने शोध अध्ययन में “हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन” में पाया कि हिंदी माध्यम की विद्यार्थियों की तुलना में अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में भावनात्मक अस्थिरता के लक्षण अधिक देखने को मिला।

(5). दोषी, पी.के. एवं कुमावत, आर. (2004) ने अपने शोध अध्ययन “उच्च एवं निम्न आय वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की चिंताओं का तुलनात्मक अध्ययन” में पाया कि- 1. उच्च आय वर्ग के विद्यार्थियों की मुख्य चिंता परीक्षा में उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने की होती है। 2. माता-पिता द्वारा मान्य व्यवहार मानकों के प्रति भी चिंता दिखाई देता है। 3. विद्यार्थी अध्यापकों की कठोरता की अपेक्षा अव्यवस्थित शिक्षण एवं धमकी भरे व्यवहार से चिंतित रहते हैं। 4. निम्न आय वर्ग के विद्यार्थी परीक्षा में शैक्षिक योग्यता प्राप्त करने हेतु अधिक चिंतित रहते हैं। 5. विद्यालय असहयोग का निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों की चिंता का कारण होता है।

(6). त्रिवेदी और ओझा (2005) “किशोर छात्रों की शैक्षिक दुश्चिंता एवं व्यवहार का अध्ययन” में पाया कि- 1. शैक्षिक दुश्चिंता के कारण किशोर अपने साथियों के साथ सामाजिक गतिविधियों में थकान व बेचैनी की परेशानी बताते हैं। 2. दुश्चिंता के ज्यादा होने पर अच्छे कार्यों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। 3. सामान्य दुश्चिंता किशोर को कक्षा में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने में भी सहायक होता है। 4. उच्च दुश्चिंता की वजह से किशोर कार्य को अच्छे ढंग से नहीं कर पाते हैं। 5. अभिभावक भी लड़कियों की अपेक्षा लड़कों से अधिक प्रेरित दिखे।

(7). मनकड़, किन्नरी (2017) ने अपने शोध अध्ययन “विद्यालय व महाविद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का अध्ययन” में पाया कि- 1. विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन में सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। 2. विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता

और सामाजिक स्वास्थ्य में सकारात्मक से संबंध देखा गया। 3. विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन में सकारात्मक से संबंध पाया गया।

#### **समस्या कथन-**

**“मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग की प्रतियोगी विद्यार्थियों की मनःस्थिति का अध्ययन करना”**

#### **पारिभाषिक शब्दावली-**

**मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे प्रतियोगी विद्यार्थी-** प्रस्तुत शोध में मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे प्रतियोगी विद्यार्थियों से आशय भारत सरकार द्वारा चिकित्सकीय पढ़ाई से पूर्व लिए जाने वाले प्रवेश परीक्षा NEET (National Eligibility cum Entrance Test) की परीक्षा को उत्तीर्ण करने हेतु तैयारी कर रहे विद्यार्थियों से है।

**आरक्षित व अनारक्षित वर्ग-** आरक्षित वर्ग से तात्पर्य समाज के सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों जैसे अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST), अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS) के समुदायों से है जिन्हें सामाजिक, शैक्षणिक या आर्थिक रूप से पिछड़ा होने के कारण शिक्षा, नौकरी और राजनीति में भारतीय संविधान में वर्णित नियमानुसार विशेष अवसर (आरक्षण) दिए जाते हैं। दूसरी ओर अनारक्षित वर्ग से तात्पर्य उन उम्मीदवारों को संदर्भित करता है जो किसी भी आरक्षित श्रेणी से संबंधित नहीं हैं और सामान्य श्रेणी के लिए उपलब्ध सीटों पर प्रतिस्पर्धा करते हैं। इन उम्मीदवारों को बिना किसी आरक्षण लाभ के केवल योग्यता (अंक) के आधार पर चुना जाता है।

**प्रतियोगी विद्यार्थियों-** प्रतियोगी विद्यार्थियों से आशय ऐसे विद्यार्थियों से है जो अपने ज्ञान, योग्यता और कौशल के आधार पर अन्य प्रतियोगियों से प्रतिस्पर्धा करते हैं। ये विद्यार्थी अपनी सफलता के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं (जैसे कि प्रवेश या चयन परीक्षाएँ) में भाग लेते हैं।

**मनःस्थिति-** मनःस्थिति का अर्थ है 'मन की अवस्था' या 'मानसिक स्थिति' जो किसी विशेष क्षण में व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और चेतना की समग्र गुणवत्ता को दर्शाता है। यह एक व्यक्ति की भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक स्थिति है जो उसके सोचने, महसूस करने और व्यवहार करने के तरीके को प्रभावित करती है।

**शोध उद्देश्य-** मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों की मनःस्थिति का अध्ययन करना।

**शोध परिकल्पना-** शोध की प्रकृति तथा उद्देश्य के अनुरूप निम्नलिखित शून्य परिकल्पना प्राकलित है-

“मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों की मनःस्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है”।

**परिसीमांकन-** प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के वाराणसी व प्रयागराज मंडल के मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे प्रतियोगी विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

**शोध प्रविधि-** प्रस्तुत शोध अध्ययन विवरणात्मक अनुसंधान विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण प्रविधि का अनुसंधान है।

**जनसंख्या-** शोध अध्ययन में मेडिकल शिक्षा में हेतु तैयारी कर रहे वाराणसी व प्रयागराज मंडल की समस्त प्रतियोगी विद्यार्थी समष्टि का निर्माण करते हैं।

**प्रतिदर्श-** उपरोक्त चयनित जनसंख्या में से यादृच्छिक प्रतिचयन निदर्शन विधि से 150 आरक्षित व 150 अनारक्षित वर्ग के कुल 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

**शोध उपकरण-** वैध एवं विश्वसनीय समंकों के संकलन हेतु मनःस्थिति मापनी डॉ. एन.के. चड्ढा व सुनीता चंदना निर्मित डाइमेंशन का टेपारामेंट स्केल का अनुप्रयोग किया गया है।

**प्रयुक्त सांख्यिकी विधि-** प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकी विश्लेषण हेतु सी.आर. मूल्य परीक्षण का अनुप्रयोग

किया गया जो की निम्नलिखित है-  $C.R. = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\left(\frac{\sigma_1}{N_1}\right)^2 + \left(\frac{\sigma_2}{N_2}\right)^2}}$

CR= क्रांतिक अनुपात,  $\sigma_1$  = प्रथम समूह का मानक विचलन,  $\sigma_2$  = द्वितीय समूह का मानक विचलन,  $N_1$  = प्रथम समूह की कुल संख्या,  $N_2$  =द्वितीय समूह की कुल संख्या,  $M_1$  = प्रथम समूह का मध्यमान  $M_2$  = द्वितीय समूह का मध्यमान

मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की मनःस्थिति में अंतर का सी.आर. (C. R.) मूल्य विश्लेषण-

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	C.R. मूल्य	P
आरक्षित	150	77.50	17.81	2.03	2.63	Df 2.98
अनारक्षित	150	73.69	18.10			.05 = 1.96 असार्थक

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान क्रमशः 77.50 व 73.69 है। मानक विचलन 17.81 व 18.10 है। मानक त्रुटि 2.03 व उनका C.R. मूल्य 2.63 प्राप्त हुआ जो df 2.98 के .05 स्तर पर C.R. सारणी के मान 1.96 से अधिक प्राप्त हुआ अस्तु सार्थक है। जिसका तात्पर्य यह है कि शोध अध्ययन की प्रकल्पित शून्य परिकल्पना “मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की मनः स्थिति में अंतर नहीं है अस्वीकृत की जाती है”। उपरोक्त विश्लेषण के विवेचन से पता चलता है कि आरक्षित श्रेणी के विद्यार्थियों की मनोदशा अनारक्षित श्रेणी के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक है जिससे वे प्रफुल्लित रहते हैं जबकि अनारक्षित श्रेणी के विद्यार्थियों की मनः स्थिति सशंकित रहती है कि उनका चयन मेडिकल शिक्षा हेतु हो पायेगा की नहीं जबकि आरक्षित श्रेणी वाले विद्यार्थी हम सभी से आसानी से मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु परीक्षा उत्तीर्ण कर सकते हैं।

**शैक्षिक निहितार्थ** - भारतीय शिक्षा एवं सेवाओं में लागू आरक्षण व्यवस्था का प्रभाव मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे प्रतियोगी विद्यार्थियों की मनः स्थिति पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। जहां अनारक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थी वर्षों वरस अत्यंत कठिन परिश्रम करके चयनित हो पाते हैं वहीं आरक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों का चयन कम अंकों पर आसानी से हो जाता है कभी-कभी ऐसी स्थिति बन जाती है कि आरक्षित वर्ग का प्रतियोगी विद्यार्थी जितने अंकों पर चयनित हो जाता है वही उससे अधिक अंक पाकर भी अनारक्षित वर्ग का प्रतियोगी चयन से बाहर हो जाता है क्योंकि वह आरक्षित वर्ग के लिए निर्धारित कटऑफ़ से तो ऊपर ही होता है किंतु अनारक्षित के लिए निश्चित कटऑफ़ तक नहीं पहुंच पाता है ऐसे में यदि प्रतियोगी संपन्न परिवार से है तो विदेश में यूक्रेन, रूस, चीन आदि देशों में पढ़ने हेतु चला जाता है यदि निर्धन है तो वह निराश हताश उदास होकर जीवन का दूसरा रास्ता चुन लेता है और कभी-कभी अत्यंत निराशा में आत्महत्या तक कर बैठता है। ऐसे में एक योग्य विद्यार्थी जो देश व समाज का भला कर सकता है वह असमय ही कल के गाल में समा जाता है वही आरक्षित वर्ग की प्रतियोगी विद्यार्थी कम अंक पर चयनित होकर 8 से 10 वर्षों में किसी तरह शिक्षा पूरी करने में सफल हो जाते हैं फिर भी वह उत्साहित रहते हैं कि सरकारी सेवाओं में उनका चयन आसानी से हो जाएगा और शीघ्र ही प्रमोशन पाकर मेडिकल अफसर भी बन जाएंगे ऐसे में जो कम अंकों पर मेडिकल शिक्षा में प्रवेश हेतु चयनित हुआ किसी

तरह से मेडिकल शिक्षा की पढ़ाई पूरी की वह देश व समाज का उन प्रतियोगी विद्यार्थियों की अपेक्षा कितना भला कर पायेगा जो आरक्षण व्यवस्था के चलते चयन से बाहर हो गए साथ ही संपन्न वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थी जो विदेशों में पढ़ने हेतु चले गए ऐसे में देश की प्रतिभा व पूंजी दोनों का देश से बहिर्गमन देश के लिए कितना घातक होता है इस पर राजनेताओं, बुद्धिजीवियों वह माननीय न्यायालय को भी विचार करना चाहिए कि वे देश को कहां ले जाना चाह रहे हैं। ऐसे में कि असमय प्रतिभाओं का दमन भी ना किया जाए और किसी वर्ग के हितों की अवहेलना भी ना हो।

#### सन्दर्भ:

- अम्बेडकर, वी.आर. (1951). “संसदीय बहस” अंक-2 पृ.- 32.
- गाँधी, एम. (1960). “द इण्डिया ऑफ माय ड्रीम” अहमदाबाद पृ.- 62.
- योगेश, अ. (1968). “आरक्षण की उलझन” दिल्ली.
- बिन, एन.एन. और नागपाल आर., एन. (1970). “विश्वविद्यालयों में असफल रहने वाले चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान स्नातकोत्तर संस्थान के छात्रों में मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन” जर्नल ऑफ़ इण्डिया मेडिकल एसोसिएशन लिब्राफॉर्म लिमिटेड, खण्ड 57 अंक 5 सितम्बर 1971.
- अम्बेडकर, वी.आर. (1984). “संविधान सभा में वाद-विवाद” खण्ड-7 पृ.- 1062-1067.
- भट्टाचार्य, एम. (1988). “पश्चिम बंगाल के शहरी माध्यमिक स्कूलों में पढ़ने वाली किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य, हताशा व असहिष्णुता के बारे में अध्ययन” पी-एच.डी. (एज्यू) कलकत्ता विश्वविद्यालय फोर्थ सर्वे ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च (1983-1988) NCERT दिल्ली.
- जवाहर, ला. ने. (1989). “लेटर्स ऑफ़ चीफ़ मिनिस्टर्स” भाग-5 ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस पृ.- 456-457.
- कश्यप, वी. (1989). “किशोरी की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक निर्धारकों पर अध्ययन” पी-एच.डी. आगरा विश्वविद्यालय पाँचवाँ सर्वे ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च (1988-1992) NCERT दिल्ली.
- डॉ. वैदिक, वी. (1991). “लोहिया ने कहा था” संकलन प्रकाशन विभाग भारत सरकार नई दिल्ली.



- ओमप्रकाश (1998). “प्राचीन भारत का सामाजिक, आर्थिक इतिहास”, विश्व प्रकाशन नई दिल्ली.
- श्रीवास्तव, एस.के. व प्रसाद, डी. सी. और कुमार, वि. (1999). “हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन” जर्नल ऑफ इण्डियन एजुकेशन (1999), अंक 36(3), पृ.- 23-28.
- दोषी, पी.के. एवं कुमावत, आर. (2004). “उच्च एवं निम्न आय वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की चिंताओं का तुलनात्मक अध्ययन” शिक्षा चिन्तन अक्तूबर 2003, मार्च 2004, पृ.- 04-10.
- त्रिवेदी और ओझा (2005). “किशोर छात्रों की शैक्षिक दुश्चिंता एवं व्यवहार का अध्ययन” [www.academiaedu/1121735/educational research abstract](http://www.academiaedu/1121735/educational-research-abstract).
- मनकड़, किन्नरी (2017) “विश्वविद्यालय व महाविद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का अध्ययन” पी-एच.डी. (मनोविज्ञान संकाय) सी.यू. शाह विश्वविद्यालय वर्धमान.